विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ **दिनांक -२६ -०५ - २०२१**

विषय -हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज शिवमंगल सिंह सुमन जी के जीवन परिचय के बारे में अध्ययन करेंगे ।

नाम (	**“डॉ. शिव मंगल सिंह**
उपनाम	**‘सुमन’**
जन्म	**5 अगस्त 1915**
आयु	**87 वर्ष**
जन्म स्थान	**उन्नाव, उत्तर प्रदेश**
पिता का नाम	**ज्ञात नहीं**
माता का नाम	**ज्ञात नहीं**
पत्नी का नाम	**ज्ञात नहीं**
पेशा	**लेखक, कवि**
बच्चे	**दो बेटे, दो बेटियाँ**

मृत्यु	27 नवंबर 2002
मृत्यु स्थान	उज्जैन, मध्य प्रदेश
अवार्ड	पद्म भूषण, पद्म श्री

सुमन जी ने अपनी शिक्षा ग्वालियर, रीवा, इंदौर, उज्जैन आदि स्थानों में जाकर पूर्ण की. शिक्षा में उन्होंने एम. ए. और पी. एच.डी. किया था. इसके बाद इन्होने 1950 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की. शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी ने 1968-78 में विक्रम विश्वविद्याल, उज्जैन में कुलपति के रूप में भी कार्य किया है. वह कालिदास अकादमी, उज्जैन के कार्यकारी अध्यक्ष भी थे. इन्होने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज में हिंदी भी पढाई है. सुमन जी कुशल अध्यापक माने जाते हैं, वे प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े हुए थे और अध्यापन कार्य में संलग्न रहे.

शिवमंगल सिंह 'सुमन' की रचनायें

शिवमंगल सिंह 'सुमन' जी ने अपने जीवन काल में गद्य रचनायें, कविता संग्रह और नाटक लिखे हैं. गद्य रचनाओं में महादेवी की काव्य साधना, गीति काव्य: उद्यम और विकास, कविता संग्रह में – हिल्लोल (1939), जीवन के गान (1942), युग का मोल (1945), प्रलय सृजन (1950), विश्वास बढ़ता ही गया (1948), विध्य हिमालय (1960), मिट्टी की बारात (1972), वाणी की व्यथा (1980), कटे अँगूठों की वंदनवारें (1991) आदि लिखे हैं.